



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनसंख्या, गरीबी एवं पर्यावरण संकट

रावेन्द्र सिंह पटेल

सहायक प्राध्यापक—अर्थशास्त्र

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सतना (म.प्र.) 485001

जनसंख्या, गरीबी एवं पर्यावरण संकट का निकट संबंध है। जनसंख्या वृद्धि के कारणों में गरीबी भी एक है। प्रायः गरीबों के बच्चे अधिक होते हैं और उनके परिवार का आकार बड़ा होता है। गरीबों में बच्चे परिवार की आय में वृद्धि के साधन बनते हैं, अतः उनका परिवार पर भार महसूस नहीं किया जाता। सभी देशों में निधनों का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है जिनका मुख्य कृषि होता है, वे अदृश्य बेरोजगारी के शिकार रहते हैं। कृषि एवं सम्बद्ध क्रियाकलापों में श्रम की आवश्यकता तथा संयुक्त परिवार प्रथा का प्रचलन इन्हें जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने की प्रेरणा नहीं देता। इस तरह गरीबी में जनसंख्या वृद्धि के समस्त सामाजिक एवं आर्थिक कारक विद्यमान रहते हैं।

बढ़ती जनसंख्या पर्यावरण की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। जनसंख्या वृद्धि विस्तृत खेती को बढ़ावा देती है। इससे वन विनाश को बढ़ावा मिलता है। परती भूमि यहाँ तक कि जल संग्रहण के क्षेत्रों को भी कृषि के कार्य में लाया जाता है। ग्रामीण गरीब अपना 44 प्रतिशत समय पशुओं को चारा एकत्र करने, जानवरों की देखभाल करने तथा उन्हें चराने में व्यतीत करते हैं तथा पर्यावरण के संरक्षण में ध्यान नहीं देते हैं। ग्रामीण जनघनत्व पर्यावरण घनत्व को व्यापक क्षति पहुँचाता है। पर्यावरण पर मानव का प्रभाव, प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के द्वारा पड़ता है। यही नहीं, वस्तुओं और सेवाओं के उत्पाद और उपभोग की प्रक्रिया से उत्पन्न प्रदूषकों के पर्यावरण में उत्सर्जन से भी यह प्रदूषित होता है। साथ-ही साथ जनसंख्या का आकार और उसमें निरन्तर वृद्धि का भी पर्यावरण पर दुष्प्रभाव पड़ता है। पर्यावरण की गुणवत्ता उपभोग किये गये संसाधनों की मात्रा तथा उत्पादन की प्रति इकाई के अनुसार प्रदूषण की उत्पत्ति, प्रतिव्यक्ति उत्पादन और उपभोग तथा जनसंख्या का आकार का परिणाम है। इन तत्वों के पर्यावरण पर प्रभाव के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सूत्र को बनाया गया है :-

$$E = PAT$$

E = पर्यावरणीय प्रभावी जनसंख्या (घनत्व और वृद्धि)

A = प्रचुरता (प्रतिव्यक्ति आय और जीवन शैली पर आश्रित प्रति व्यक्ति

उपभोग।

T = उत्पादन में प्रयुक्त हानिकारक प्रौद्योगिकी

इसमें जनसंख्या घनत्व और वृद्धि को पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारक माना जाता है। इससे संसाधनों पर दबाव पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप वे समाप्त हो जाते हैं और पर्यावरण का हास होता है। प्रौद्योगिकी अन्य तीसरा प्रमुख कारक है जो पर्यावरण को अत्यधिक प्रभावित करता है।

प्रौद्योगिकी का सबसे अधिक हानिकारक प्रभाव विकसित देशों में है, जबकि जनसंख्या वृद्धि और जनसंख्या घनत्व जैसे कारकों का सबसे अधिक प्रभाव अल्पविकसित तथा विकासशील देशों में है। इस प्रकार विकसित देशों की अत्यधिक उपभोग की प्रवृत्ति एवं विकासशील देशों की गरीबी में पर्यावरणीय संकट के बीज छिपे हुए हैं।

विश्व के विकसित देश औद्योगिक देश हैं अर्थात् आर्थिक विकास का आधार औद्योगीकरण है। आर्थिक प्रगति के लिए औद्योगिक विस्तार और औद्योगीकरण आवश्यक है, किन्तु औद्योगिक इकाइयों की स्थापना के लिए विस्तृत भूखण्ड की प्राप्ति के लिए पहले वन विनाश करना पड़ता है। उत्पादन इकाइयों से वांछित उत्पादन के लिए अतिरिक्त हानिकारक अवशिष्ट पदार्थ प्रदूषित जल, जहरीली गैस, रासायनिक अवशेष आदि भी निकलते हैं। आज के विश्व में आर्थिक सामाजिक व्यवस्था को नया आयाम देने के लिए तीव्र औद्योगिक विकास पर जोर दिया जा रहा है। विगत डेढ़ सौ वर्षों से औद्योगिक देशों में बढ़ता उत्पादन विश्व के लिए प्रलोभन बन गया है। अतः सभी देश सोचते हैं कि औद्योगिक उन्नति से ही आर्थिक-सामाजिक विकास संभव है। औद्योगिक क्रांति के पश्चात पहले यूरोप में तथा बाद में विश्व के अन्य भागों में उद्योगों की स्थापना बड़े पैमाने पर हुई। उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का तीव्र गति से दोहन होने लगा। तीव्र औद्योगीकरण से लोगों का जीवन-स्तर तो बढ़ा, किन्तु पर्यावरण की अत्यधिक हानि हुई। औद्योगीकरण से वनों का विनाश उद्योगों से निकलने वाले हानिकारक पदार्थों से प्रदूषण, जल संकट, अति नगरीकरण आदि समस्याएं उत्पन्न हुई।

मानव की प्रगति एवं विकास का आधार उसके द्वारा प्रकृति अथवा पर्यावरण का उपयोग है। मानव विकास की प्रारम्भिक अवस्था में सीमित जनसंख्या तथा सीमित आवश्यकताओं के कारण प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग के उपरान्त भी उसका पर्यावरण से सामंजस्य बना रहा, किन्तु बढ़ती जनसंख्या तथा तकनीकी प्रकृति के साथ-साथ प्रकृति के शोषण की दर में वृद्धि होती गई। आर्थिक विकास की दौड़ में पर्यावरण पर दबाव बढ़ता गया। पर्यावरण पर शत्रुतापूर्ण व्यवहार करके किया गया विकास स्वयं मानव के लिए आत्मघाती सिद्ध हुआ। निरन्तर विकास मानव की स्वाभाविक प्रकृति है तथा पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। पर्यावरणीय समस्याओं के कारण विकास को रोका नहीं जा सकता है, तो

पर्यावरण ह्रास के कारण समस्त जीव जगत पर बढ़ते संकट की उपेक्षा भी नहीं की जा सकती है। अतः पर्यावरण को बचाते हुए सतत विकास की अवधारणा विकसित हुई। विकास में परिस्थितिकी दृष्टिकोण सम्मिलित करके प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग भी किया जा सकता है तथा परिस्थितिकी संकट से भी बचा जा सकता है। संतुलित विकास, समन्वित विकास तथा सतत विकास इसके विभिन्न पक्ष हैं। सतत विकास से अभिप्राय ऐसे विकास से है, जो पर्यावरण को हानि पहुंचाए बिना जीवन की गुणवत्ता जारी रख सके। विकास को मात्र आर्थिक उत्पादन से न जोड़कर उसके सामाजिक, आर्थिक एवं परिस्थितिकीय पक्षों पर भी ध्यान देना चाहिए। परिस्थितिक तंत्र के अनुरूप विकास हेतु पर्यावरण को कम से कम हानि पहुंचाने वाली प्रौद्योगिकी का विकास जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण, भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए संसाधनों का नियोजित व नियमित उपभोग, संसाधन संरक्षण आदि उपायों पर अमल करना होगा। चूंकि हमारा अस्तित्व पर्यावरण के साथ जुड़ा है। अतः पर्यावरण को बचाते हुए सतत विकास की अवधारणा को विकसित करना समयानुकूल होगा।

संदर्भ

1. डॉ. वि कुमार एवं डॉ. शिवनारायण गुप्त “जनांकिकी” एसबीपीडी पब्लिशिंग हाउस आगरा (उ.प्र.), 2012, पृष्ठ क्र. 379–392
2. डॉ. जे.पी. मिश्रा, “जनसंख्या विकास एवं पर्यावरण प्रदूषण की चुनौतियाँ” साहित्य संस्थान गाजियाबाद (उ.प्र.) 2014 पृष्ठ क्र. 20
3. डॉ. निशा मिश्रा, “जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर प्रभाव” आलेख, पुस्तक— जनसंख्या, विकास एवं पर्यावरण प्रदूषण की चुनौतियाँ संपादक—डॉ. जे.पी. मिश्रा, साहित्य संस्थान गाजियाबाद (उ.प्र.) 2014, पृष्ठ क्र. 374
4. डॉ. नरेन्द्र मोहर अवस्थी, ‘पर्यावरण भूगोल’ म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल 2010, पृष्ठ क्र. 72
5. डॉ. आशा खन्ना एवं आर. के. श्रीवास्तव ‘प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं पर्यावरण प्रदूषण’ म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी 2008, पृष्ठ क्र. 69
6. डॉ. हरिशचन्द्र व्याज, ‘जनसंख्या, प्रदूषण और पर्यावरण’ विद्या प्रकाशक नई दिल्ली, 2006 पृष्ठ क्र. 89
7. चन्द्रभाव यादव, ‘पर्यावरण संरक्षण का हो सामूहिक प्रयास’ आलेख, कुरुक्षेत्र जून 2012, पृष्ठ क्र. 03
8. ललित खुराना, ‘संपादकीय: कुरुक्षेत्र, जून 2012 पृष्ठ क्र. 02
9. डी.डी. शर्मा ‘अर्थशास्त्र यूजीसी नेट, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स आगरा, 2010, पृष्ठ क्र. 467
10. CSE Report 2010